Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

भारत में इस्लाम धर्म का आगमन और उसका प्रभाव

Shamshad Ali*

(10+2, Teacher) NET, History, Shishu Sangh Senior Secondary School, Sonpur (Saran) Bihar

सार – भारतीय गणतंत्र में हिन्दू धर्म के बाद इस्लाम दूसरा सर्वाधिक प्रचलित धर्म है, जो देश की जनसंख्या का 14.2% है (2011 की जनगणना के अनुसार 17.2 करोड़)।

भारत में इस्लाम का आगमन करीब 7वीं शताब्दी में हुआ था (629 ईसवी सन्) और तब से यह भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत का एक अभिन्न अंग बन गया है। वर्षों से, सम्पूर्ण भारत में हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियों का एक अद्भुत मिलन होता आया है और भारत के आर्थिक उदय और सांस्कृतिक प्रभुत्व में मुसलमानों ने महती भूमिका निभाई है।

भारत में विवाह, विरासत और वक्फ संपत्ति से जुड़े मुसलमानों के अधिकार मामले मुस्लिम व्यक्तिगत कानून द्वारा नियंत्रित होते हैं और अदालतों ने यह फैसला दिया कि शरीयत या मुस्लिम कानून की भारतीय नागरिक कानून की अपेक्षा अधिक प्रधानता होगी।

----------X----------

इस्लाम शब्द का अर्थ

अरबी भाषा में इस्लाम का अर्थ है, हुक्म मानना, आत्मसमर्पण (Surrender) एवं आज्ञापालन (Submission) "इस्लाम" शब्द का दूसरा अर्थ है सुलह, शान्ति (Peace). इस्लाम धर्म का नाम 'इस्लाम' इसलिए रखा गया है कि यह अल्लाह के आदेशों का अनुवर्तन और उसका आज्ञापालन है।

इस्लाम की शिक्षाओं का मूल स्त्रोत कुरआन

ईश्वर सृष्टि का सृष्टा है। मनुष्य सृष्टि का ताज है, सर्वोत्तम रचना है। पवित्र कुरआन में अल्लाह का निर्देश है – "ऐ लोगों ! हमने तुमको एक पुरूष तथा एक स्त्री से उत्पन्न किया फिर तुम्हारे अनेक कुटुम्ब तथा कुल बनाए ताकि एक दूसरे को पहचान सको अल्लाह की दृष्टि में तुममे अधिक प्रतिष्ठा वाला व्यक्ति वह है जो अधिक संयमी है।"[1] इस्लाम में कोई भी व्यक्ति, लिंग या जाति या रंग या वर्ग व्यवसायी के आधार पर किसी दूसरे से श्रेष्ठ नही है। भेद का केवल एक ही आधार है तकवा अर्थात ईश्वर का भय, उसके नियमों का पालन करना, उसकी और उसके जीवों की सेवा करना।

पैगंबर

पैगंबर एक शिक्षक या नेता होता है, "जो अपनी वचन और उदाहरण के द्वारा ईश्वर से संबंध स्थापित करने और संबंध बनाये रखने का मार्ग दिखाता है।"[2] लगभग एक लाख चैबीस हजार पैगंबर ईश्वर द्वारा पृथ्वी पर भेजे गए।

इस्लाम धर्म का संस्थापक मुहम्मद साहब का जन्म 570 ई0 में अरब के मक्का नामक शहर में हुआ था। "आपका जीवन संघर्षमय था, परन्तु आप उसमें से खरे सोने के समान उत्तीर्ण होकर इतिहास में अमर हो गये।"[3] माइकल एच. हार्ट जिसने "The 100 a ranking of the most influential persons in History" (इतिहास के सौ महत्वपूर्ण प्रभावशाली लोग) पुस्तक लिखी उसने इन महान व्यक्तियों में सबसे प्रथम स्थान पैगंबर हजरत मुहम्मद साहब को दिया है।

इस्लाम का उदय और प्रचार

इस्लाम का उदय अरब के तत्कालीन कबीलाई समाज की पृष्ठ भूमि में हुआ। इस्लाम के उदय के बाद पैगंबर मुहम्मद साहब का मदीना जीवन प्रारंभ होता है, और वही से इस्लाम का इतिहास आरंभ होता है। उन्होने अपने उपदेशों के कारण अरबों के अंदर एक नई रूह फूंक दी। मुहम्मद साहब ने अपने सहाबा (अनुयायी) से कहा कि 'अल्लाह ने मुझे तमाम इंसानों

www.ignited.in

के लिए रहमत बनाकर भेजा है, तुम मेरी तरफ से मेरा दीन (इस्लाम) तमाम इंसानों तक पहुचाओं।[4]

मूल्कों के बादशाहों के पास अपने सहाबा को खत देकर भेजना

मुहम्मद साहब ने अपने मृत्यु से पहले रोम, ईरान, मिस्र तथा हबशा के बादशाहों के नाम खत भेजकर उन्हें इस्लाम स्वीकार करने का आग्रह किया:

'बिसमिल्ला हिर रहमानिर्रहीम'

"अल्लाह के रसूल मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह की तरफ से हिरक्ल के नाम जो रूम का बड़ा (रोम का बादशाह) है उस पर सलामती हो जिसने हिदायत (सीधा मार्ग) को इख्तियार किया, अम्मा बअ्द' मैं तुमको इस्लाम की दावत देता हूँ, मुसलमान हो जाओं सलामती पालोगे और अल्लाह तआला तुमको दुगना अज्र अता फरमायेगें और अगर तुमने इस्लाम से मुँह फेरा तो तुम्हारी रिआया का गुनाह भी तुम पर होगा और ऐ अहले किताब! (किताब वालो का अर्थ है जिनके पास ईश्वर की किताब आयी है यहूदी तथा इसाई, इनके पास तौरेत तथा इंजील (बाइबिल) हजरत मूसा तथा हजरत ईसा) आओं इस कलिमे की तरफ जो हमारे और तुम्हारे बीच बराबर है (और वह यह है) कि हम सिर्फ अल्लाह की इबादत करें और उसके साथ किसी चीज को शरीक न करे और हम अल्लाह के अलावा एक दूसरे को खुदा न बनाये, अगर अहले किताब इस दावत से मुँह फेर ले तो (ऐ मुसलमानों!) तुम कह दो कि हम यकीनन मुसलमान है।"[5]

डॉ. रमेशचन्द मजूमदार के अनुसार- "मुहम्मद साहब की मृत्यु के छः वर्षो के भीतर ही अरबों ने सीरिया और मिस्र को जीत लिया था। इसके बाद शीघ्र ही अफ्रीका का उत्तरी किनारा, स्पेन और ईरान उनके हाथों पड़ गये और एक शताब्दी बीतते खलीफा का साम्राज्य फ्रांस में लायर से लेकर आक्सस और काबुल नदी (अफगानिस्तान) तक फैल गया था।" आज विश्व में प्रति छः या सात व्यक्तियों में से एक अपने को इस्लाम का अनुयायी बताता है।

अरबों और भारतवासियों का संबंध

सरानद्वीप (श्रीलंका) के निवासियों का विचार है कि हिन्दुस्तान के निवासी हजरत आदम के समय से नावों द्वारा मक्का मोअज्मा और अरब के दूसरे शहरों में जाया करते थे। इस्लाम के प्रादुर्भाव से पहले हिन्दुस्तान के ब्राह्मन खानेय काबा की यात्रा और मूर्तियों की पूजा करते थे और काबा को अपना परम पूजनीय धार्मिक स्थल समझते थे।[6] अरबों और भारतवासियों का संबंध मुहम्मद साहब के जन्म से कम-से-कम पांच सौ साल पहले से चला आ रहा था। रोमन इतिहास लेखक लिखते है कि रोम और युनान के जो जहाज उन दिनों भारत आते-जाते थे उनके भी नाविक अधिकतर अरब के ही होते थे।[7] अरबों के आगमन से एक नए धर्म (इस्लाम) का प्रवेश हुआ जिसने अपनी सादगी और बंधुत्व के सिद्धांन्तों से भारतीयों को आकर्षित किया।

भारत में इस्लाम धर्म

अरब पक्के सौदागर थे वे सातवी सदी में भारत के पश्चिम तट पर अलग-अलग बंदरगाहों में बड़ी संख्या में आकर बसने लगे। ये लोग इसी देश की स्त्रियों के साथ विवाह कर लेते थे, इनकी बस्तिया मालाबार (केरल) में थी। 'मालाबार के हिन्दु राजा चेरामन पेरूमल ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। राजा का नाम अब्दुर्रहमान सानी रखा गया।'[8] राजा चेरामन पेरूमल के उत्तराधिकारियों ने बड़े हर्ष के साथ अरब विद्वानों का स्वागत किया और मालाबार तट पर ग्यारह मस्जिद बनाई।

राष्ट्रकुट शासकों ने मुस्लिम व्यापारियों को अपने राज्य में बसने और इस्लाम का प्रचार करने की अनुमति दी। राष्ट्रकुट साम्राज्य के अनेक तटीय नगरों में नमाज के लिए उनकी बड़ी-बड़ी मस्जिदे थी। सहिष्णुता की इस नीति ने विदेशी व्यापार को बढ़ावा दिया जिससे राष्ट्रकुटों की समृद्धि बढ़ी। अरब यात्री सुलेमान (851 ई0) राष्ट्रकूट शासक अमोधवर्ष (814-878) को बल्हार कहता है और उसे संसार के चार महानतम शासकों में गिनता हैं। विचित्र बात यह थी कि "हर जगह अरबों तथा नये भारतीय-मुसलमानों के साथ सहृदयता का बरताव किया जाता था और उन्हें अपने धर्म का पालन करने तथा नये लोगों को मुसलमान बनने की आज्ञा थी।"[9]

सिंध-विजय और उसका प्रभाव

'चचनामा' अरबों की सिंध-विजय की जानकारी का मूल स्रोत है। यह अरबी भाषा में लिखी गई है। मुहम्मद अली-बिन-अबूबकर कुफी ने नासिरूद्दीन कुवाचा के समय (1216) में इसकी फारसी में अनुवाद किया। 712 ई0 में हज्जाज बिन युसूफ के भतीजे एवं दामाद मुहम्मद बिन कासिम ने 17 वर्ष की अवस्था में सिंध पर आक्रमण किया। डा0 बेनी प्रसाद ने अपनी पुस्तक जहांगीर का इतिहास में लिखा है कि "8वीं सदी में मुहम्मद बिन-कासिम की सिंध पर हुकूमत नरमी और धार्मिक उदारता की एक जीती-जागती मिसाल है।" मुहम्मद बिन कासिम ने हज्जाज को एक पत्र लिखकर पूछा कि यहाँ

के लोगों के साथ कैसा व्यवहार किया जाए। हज्जाज ने उत्तर दिया:

"मेरे प्रिय भतीजे मुहम्मद बिन कासिम का पत्र मिला और उसके तथ्यों को समझा गया। ऐसा प्रतीत होता है कि ब्राह्ममणवाद के मुख्य निवासियों ने बुद्ध के मंदिर की मरम्मत करने और अपना धर्म पालन करने की अनुमति चाही है, क्योंकि उन्होने आत्म-समर्पण कर दिया हैं, खलीफा को कर देना स्वीकार कर लिया है, अतएव उनसे कुछ और अपेक्षा करना उचित नही है। वे हमारे संरक्षण में ले लिए गए है और हम किसी भी दशा में उनके जीवन या संपति को नुकसान नही पहुचाएँगें। उन्हें अपने देवताओं की उपासना करने की अनुमति दी जाती है। किसी को भी अपने धर्म का पालन करने से मना करने की अनुमति नही है। वे अपने घरों में जैसे चाह वैसे रह सकते है।"[10]

प्रत्युत्तर में मुहम्मद बिन कासिम ने घोषणा की "सुलतान तथा जनता के बीच ईमानदारी का व्यवहार करो और यदि वितरण का प्रश्न उठे तो उसे न्यायपूर्वक करो अदा करने की योग्यता को ध्यान में रखते हुए राजस्व निर्धारित करो। परस्पर मेल से रहो और एक दूसरे का विरोध मत करों, जिससे देश को दुखी न होना पड़े।"

'मुहम्मद बिन कासिम द्वारा सिंध जीते जाने के बाद सिंध भारत और अरब दुनिया के बीच वैज्ञानिक सांस्कृतिक संबंधों का माध्यम बन गया।[11] अरब वासियों ने चिकित्सा, दर्शन, नक्षत्र विज्ञान, गणित एवं शासन प्रबंध की शिक्षा भारतीयों से ग्रहण की। चरक संहिता एवं पंचतंत्र (कलील वा दिम्म्ना) ग्रंथों का अरबी भाषा में अनुवाद किया गया। बगदाद के खलीफाओं ने भारतीय विद्वानों का संरक्षण प्रदान किया। खलीफा अल-मंसूर के समय (753-74) में अल-फजारी ने भारतीय विद्वानों से 'ब्रह्म सिद्धांत' तथा 'खण्डखाद्यक' नामक ग्रंथों का संस्कृत से अरबी में अनुवाद किया। तबरी लिखता है कि खलीफा हारून-अल-रशीद (786-809) को एक भारतीय वैद्य ने असाध्य रोग से अच्छा किया था। अरब खगोलशास्त्री अबु माशर ने बनारस जाकर एक दशक से अधिक समय तक संस्कृत भाषा तथा खगोलशास्त्र का अध्ययन किया। अरब यात्री इस्तखरी ने 951 ई0 में भारत की यात्रा की उसने किताब अल-अकलीम और मसालिक वल ममालिक लिखा। इस्तखरी के बारे में कहा जाता है कि उसने विश्व का एक मानचित्र बनाया। अरबों की सिंध विजय का आर्थिक क्षेत्र पर भी प्रभाव पड़ा। अरब से आने वाले व्यापारियों ने पश्चिम समुद्र एवं दक्षिण पूर्वी एशिया में अपने प्रभाव का विस्तार किया। "भारतीयों ने नवागंतुको को काफी कुछ दिया और बदले में बहुत कुछ प्राप्त किया।"[12] सर विलियम म्योर का मत है कि सिन्ध-विजय ने इस्लामी नीति में एक नये युग का आरंभ किया।

भारत की धरती पर मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना

भारत में इस्लाम के आगमन को तीन आक्रमनकारियों का कारनामा मानते है। मुहम्मद बिन कासिम, महमूद गजनवी और मोहम्मद गोरी। अगर हम अरबों को सिंघ विजय को अनदेखी कर दे तो इस देश में इस्लाम का प्रथम अगुआ महमूद गजनवी को मान सकते है। उसका आक्रमण भारतीय मुस्लिम राजनीति का पहला कदम था। मोहम्मद गोरी तथा उसके गुलामों ने प्रथम कदम को आगे बढ़ाया और मुस्लिम शासन निर्माण के मार्ग को प्रशस्त किया। अन्ततः भारत की धरती पर मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना हुई।

इस्लाम धर्म के समता एवं भ्रातृत्व के सिद्धांत

मुसलमानों के अपने कानून कुरआन पर आधारित थे किन्तु ये कानून गैर-मुस्लिमों पर लागू नही किये जाते थे। मुसलमानों का सामाजिक संगठन अन्य धर्मो की तुलना में अधिक उत्कृष्ट था। उनमें ऊँच-नीच का कोई भेद-भाव नहीं था। इस्लाम धर्म के समता एवं भ्रातृत्व के सिद्धांत की ओर निम्न एवं शूद्र वर्ग इस्लाम धर्म की ओर आकृष्ट होने लगे। एक नए धर्म इस्लाम के भारत में आ जाने से धार्मिक क्षेत्र में भारत समृद्ध हुआ।

हिन्दु-मुस्लिम संस्कृति के प्रतिनिध

अमीर खुसरो प्रारंभिक मध्यकालीन भारत में हिन्दु-मुस्लिम संस्कृति के प्रथम तथा सबसे प्रमुख प्रतिनिधि थे। अमीर खुसरो अपनी प्रसिद्ध रचना नूह सिपेहर में लिखता है कि मेरे भारत प्रशंसा का कारण यह है कि भारत मेरी जन्मभूमि है और मेरा देश है। "पैगम्बर मुहम्मद साहब ने भी कहा है कि-"स्वदेश प्रेम धर्म का एक अंग है।" हिन्दु तथा मुस्लिम संतों ने भी दोनों सम्प्रदायों के बीच भाईचारा बनाये रखने के प्रयत्न किए।

हिन्दुस्तान के लिए मनोरम उदात्त भावनाओं की एक कविता इसामी ने 1350 में लिखी-

"हिन्दुस्तान की समृद्धि शानदार है

स्वर्ग स्वयं भी इस बाग से ईष्र्या रखता है।

www.ignited.in

इसका भू-भाग पृथ्वी का उसी प्रकार से प्रमुख गहना हैय

जैसे कि एक आकर्षक युवती के मुख पर सौन्दर्य तिल होता है।''

पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त (पाकिस्तान) की तोची वादी में 757 में एक अरब सूबेदार फय इब्न अम्मार ने एक तालाब बनवाया और फिर वह दो भाषाओं में एक शिलालेख लगवाया। एक तो अरबी (कूफी) में और दूसरे संस्कृत में और संस्कृत शिलालेख बाकायदा ओम् से शुरू होता है।[13] मुहम्मद उफी लिखता है कि जब खम्बात के मुसलमानों पर हिन्दुओं ने आक्रमण किया, तो चालुक्य वंशी शासक जय सिंह सिद्धराज (1094-1143 ई0) ने अपने ही अपराधी प्रजाजनों को दण्ड दिया और मुआवजे के रूप में मुसलमानों को एक मस्जिद बनाने के लिए आर्थिक सहायता दी।[14]

जियाउद्दीन बर्नी के अनुसार जब 1351 ई0 में फिरोज तुगलक दिल्ली के गद्दी पर बैठा तो मुसलमानों और हिन्दुओं के दिलों को राहत नसीब हुई। 1352 ई0 में गया में बनाए गए सूर्य मंदिर के एक संस्कृत शिलालेख में सुल्तान फिरोज तुगलक का नाम दो बार आया है।

हिन्दू शासकों ने भी ऐसा ही रवैया अपनाया। राणा कंुभा ने अपना प्रसिद्ध विजय-स्तंभ बनवाया तो अरबी में 'अल्लाह' शब्द उसकी तीसरी मंजिल पर नौ बार और आठवीं मंजिल पर आठ बार उम्दा कारीगरी के साथ खंमियों में आया हैं।[15] इसी कारण एक अंग्रेज पे्रक्षक एच0 बी0 डब्ल्यू0 गारिक 1883-84 ई0 में अपनी खोज में लिखा है- ''यह खोज एक समस्या पैदा करती है, कि जिसका मुझें अकेला हल यह दिखाई देता है कि तीन-चार सदी पहले हिन्दूओं और मुसलमानों को बांटने वाला अवरोध मौजूदा समय के अवरोध की अपेक्षा बहुत कम कठोर थी।''

ऐसे इतिहासकार जो हिंदु-मुस्लिम संबंधों में दरार की बात कहते है, भ्रामक है। जीवन की तमाम पहलुओं में दोनों का इतना सुंदर समन्वय हो गया था कि उसे अलग करना कठिन ही नही असंभव सा प्रतीत होता है।

ऐतिहासिक तथ्यों की व्याख्या अगर भ्रामक हो तो समाज में विकृति पैदा होती है और समाजिक सौहार्द में खटास उत्पन्न होता है।

21वीं शताब्दी के युग मे हिंदु-मुस्लिम संबंध पर विवादपूर्ण लेखों में उलझना समाज एवं राष्ट्र के हित में नही है। मनुष्य स्वभाव से सामाजिक प्राणी है, चाहे वह हिंदु हो या मुसलमान, वह शांति पूर्वक रहना पसंद करता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. कुरआन - सूरा, अल-हुजुरात 49:13
2. भारत की राष्ट्रीय संस्कृति, एस आबिद हुसैन, अनुवाद- दुर्गा शंकर शुक्ल, पृष्ठ सं0- 64
3. संसार के महापुरूष, अभिलाष दास, पृष्ठ सं0-97
4. हयातुस्सहाबा - भाग-1, हजरत मौलाना मुहम्मद यूसूफ कांघलवी पृष्ठ सं0-216
5. वही पृष्ठ सं0-232
6. तारीखे फरिशता, भाग-2, मूल लेखक- मुहम्मद कासिम हिन्दूशाह फरिशता, अनुवादक- नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, पृष्ठ सं0- 641, 2005
7. भारत में अंग्रेजी राज-खण्ड-प्रथम, सुंदरलाल, पृष्ठ सं0-37
8. वही पृष्ठ सं0- 40
9. भारत का इतिहास, डॉ. आर्शिवादी लाल श्रीवास्तव पृष्ठ सं0- 01, 02
10. भारत का इतिहास, रोमिला थापर पृष्ठ सं0- 251 (आबिद-पृष्ठ सं0-185)
11. मध्यकालीन भारत, राजनीति, समाज और संस्कृति-सतीशचन्द्र पृष्ठ सं0-6
12. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास-खंड-1, ताराचन्द्र, पृष्ठ सं0-2
13. मध्यकालीन भारत, अंक-सात, इरफान हबीब, पृष्ठ सं0-10
14. भारत में मुस्लिम शासन का इतिहास, एस0 आर0 शर्मा पृष्ठ सं0- 36,37
15. मध्यकालीन भारत, अंक-सात, इरफान हबीब, पृष्ठ सं0- 16

Corresponding Author

Shamshad Ali*

(10+2, Teacher) NET, History, Shishu Sangh Senior Secondary School, Sonpur (Saran) Bihar

sali311980@gmail.com